**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारी हाट खुटौना मधुबनी**

**मो० न० 95467437**

**Email-** [**mishrasm966@gmail.com**](mailto:mishrasm966@gmail.com)

**B. A. III**

**रस निष्पत्ति**

**एहि शंकाक समाधानमे भट्टनायकक महत्वपूर्ण कार्य अछि | ओ अपन मौलिक विचार प्रस्तुत कएने छथि आओर साधारणीकरणक कल्पना कए क रसानुभुतिक प्रक्रियाक रहस्यक उद्घाटन कएलनि अछि | भट्ट नायक सांख्य मतानुयायी छलाह आओर हुनकर व्याख्या सांख्य सम्मत अछि | भट्ट नायक रस कें अनुमेय या प्रतीति नहि मानैत छथि , अपितु ओकरा भोज्य मानैत छथि | संयोग सँ तात्पर्य भोज्य – भोजक भाव अछि आओर निष्पत्तिक तात्पर्य भुक्ति अछि | ओ रसानुभुतिक प्रक्रियाक तीन अवस्था मानलनि अछि - अभिधा , भावकत्व आओर भोजकत्व | अभिधा व्यापारक द्वारा प्रेक्षक अथवा सहृदय शब्दक बुझैत छथि एवं समस्त प्रसंगक विशिष्ट स्थितिक ज्ञान प्राप्त कए लैत छथि | पुनः भावकत्व व्यापारक द्वारा विभावादिक साधारणीकरण भए जाइत अछि आओर भावक पात्र विशिष्टता समाप्त भए जाइत अछि एवं सामाजिकक मनोवृत्ति विभावादिकक विशिष्ट रुपमे प्रस्तुत कएल जएबा सँ निर्वैयक्तिक भए जाइत अछि | आलम्बन आओर उद्दीपन सर्वसाधारणक अनुभूति कें स्पर्श करएवला विशेषता कें धारण कए लैत अछि आओर जे रसास्वाद मे व्यक्तिगत भावनाक प्रतिबन्ध अथवा विरोध पड़ैत छल ओ समाप्त भए जाइत अछि | एवं तेसर अवस्था अथवा व्यापार अछि भोजकत्वक | जखन विभावादि साधारणीकृत भए जाइत अछि तखन सहृदय अथवा सामाजिक मे तमस एवं रजस गुण शांत भए जाइत अछि आओर सत्वोद्रेक होइत अछि | ओ अखंड स्वप्रकाशानन्दक अनुभव करैत अछि जे भोजकत्वक अवस्था रहैत अछि | भट्ट नायकक मतानुसारें ई रसानन्द निर्वैयक्तिक , सत्वोद्रेक युक्त , चिन्मय , वेधान्तरस्पर्श शून्य , संविद्विश्रान्ति युक्त होएबाक कारणें परब्रम्हसहोदर कहल जाइत अछि | इएह मत मुक्तिवाद अछि |**

**भट्ट नायक साधारणीकरणक द्वारा रसानुभूतिक रहस्य कें स्पष्ट करबा मे बड महत्वपूर्ण कार्य कएने छथि | भट्ट नायक ध्वनि विरोधी आचार्य छलाह तैं ओ भावकत्व आओर भोजकत्व व्यापारक कल्पना कएलनि , जकर आवश्यकता ध्वनिवादी समालोचक अभिनव गुप्त स्वीकार नहि कएलनि | रसानुभूति एक यथार्थ शारीरिक मांस व्यापार अछि तैं मनोवैज्ञानिक दृष्टि सँ एकर विश्लेषणक आवश्यकता बनल रहल |**

**अभिनव गुप्त भट्ट नायकक मटक खण्डन करितहुं हुनक साधारणीकरणक सिद्धांतक विकास कएलनि अछि | अभिनवगुप्तक मत अभिव्यक्ति वादक नाम सँ बुझल जाइत अछि | ओ रसक उत्पत्ति , अनुमिति आओर भुक्ति कें स्वीकार नहि कए भरत सूत्रक निष्पत्ति शब्दक अर्थ अभिव्यक्तिक रुपमे सिद्ध करैत छथि | अभिनवगुप्तक मत भरत सूत्रक सबसँ अधिक संगत व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि , संगहि मनोवैज्ञानिक आओर यथार्थवादी दृष्टिकोण कें सेहो संतुष्ट करैत अछि |**

**अभिनवगुप्त भावकत्व आओर भोजकत्व व्यापार कें अशास्त्रीय मानैत छथि | भोजकत्व त रसक स्वभावहि अछि एवं भावकत्व भावक विशेषता | ओ शब्द कें अर्थ प्रकाशन एवं साधारणीकरणक कारण व्यंजनाक विभावन व्यापार कें मानैत छथि | हुनका दृष्टि मे रस व्यंग्य अछि | एहि कारण सँ व्यंजनाक द्वारा ओ सहृदय कें प्रभावित करैत अछि | रसास्वादक अधिकारी सहृदय अछि | स्थायी भाव व्यंग्य होइत अछि एवं विभावादि व्यंजक रूप | अतएव व्यंजक व्यंग्य सम्बन्ध संयोगक अर्थ भेल | व्यंजनाक विभावन व्यापार सँ विभाव आओर स्थायी भावक साधारणीकरण होइत अछि , अर्थात नायक आदि अनुकार्यक भाव वैशिष्ट्यहीन भए जाइत अछि एवं सहृदय कें हृदयस्थ वासना रूप भाव कें जगबैत अछि | अभिनवगुप्तक मत छनि – “ न ह्येतच्चित्त वृत्ति वासना शून्य: कश्चित् प्राणी भवति | “ अर्थात कोनो मनुष्य वासना शून्य नहि होइत अछि | ई वासना गुप्तावस्था मे पड़ल रहैत अछि आओर जखन अभिनय सँ काव्यार्थ जागि उठैत अछि ओहि प्रकारें जेना माटि मे गंध नुकाएल रहैत अछि आओर पानि पड़ला पर ओ प्रस्फुटित भए उठैत अछि , लेकिन ओना विदित नहि होइत अछि |**

**रस सहृदय संवेद्य अछि | एहि प्रकारें विभावादि आओर सहृदय दुनू व्यक्तिक सम्बन्धक परिहार भए गेला सँ अखण्ड रसक आनंद प्राप्त होइत अछि |**